भारत की ब्लू इकोनॉमी : गहरे समुद्र और अपतटीय मत्स्य पालन का उपयोग करने की रणनीति

UPSC प्रासंगिकता -

- **GS पेपर II (शासन, नीतियां और अंतर्राष्ट्रीय संबंध)**
- **GS पेपर III (आर्थिक विकास, पर्यावरण और सुरक्षा)**

ख़बरों में क्यों

नीति आयोग ने **"भारत की ब्लू इकोनॉमी – गहरे समुद्र और अपतटीय मत्स्य पालन का उपयोग करने की रणनीति"** (India's Blue Economy – Strategy for Harnessing Deep-Sea and Offshore Fisheries) शीर्षक से एक रिपोर्ट जारी की है। यह रिपोर्ट भारत के गहरे समुद्र और अपतटीय मत्स्य पालन क्षेत्र को विकसित करने के लिए एक वैज्ञानिक, टिकाऊ और समावेशी **रोडमैप** की रूपरेखा प्रस्तुत करती है, जिसका लक्ष्य **निर्यात को बढ़ावा देना, आजीविका के अवसर पैदा करना और भारत की समुद्री उपस्थिति को मज़बूत करना** है।

पृष्ठभूमि: भारत की ब्लू इकोनॉमी को समझना

ब्लू इकोनॉमी से तात्पर्य आर्थिक विकास को गति देने, आजीविका का समर्थन करने और समुद्री पारिस्थितिक तंत्र की रक्षा करने के लिए **समुद्री संसाधनों के टिकाऊ उपयोग** से है। इसमें मत्स्य पालन, पर्यटन, शिपिंग (नौवहन), और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्र शामिल हैं, जबकि यह जलवायु परिवर्तन और समुद्री प्रदूषण जैसी चुनौतियों का भी समाधान करती है।

अंतरिम बजट 2024 में, सरकार ने **ब्लू इकोनॉमी 2.0** की शुरुआत की, जिसमें निम्नलिखित पर ज़ोर दिया गया:

- तटीय पारिस्थितिक तंत्र की बहाली
- टिकाऊ जलीय कृषि (Sustainable Aquaculture)
- महासागर विकास के लिए बहु-क्षेत्रीय दृष्टिकोण (Multi-sectoral approach)

महासागर पृथ्वी की सतह का **75%** भाग कवर करते हैं और वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, जो **ब्लू इकोनॉमी** को टिकाऊ विकास के लिए **आवश्यक** बनाता है। प्रमुख पहलों में शामिल हैं:

- **सागरमाला परियोजना** – बंदरगाह के नेतृत्व में बुनियादी ढांचा और तटीय विकास
- **डीप ओशन मिशन** – गहरे समुद्र के संसाधनों की खोज और टिकाऊ उपयोग
- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग** – जैसे ब्लू इकोनॉमी पर भारत-नॉर्वे टास्क फोर्स

ये प्रयास पारिस्थितिक स्थिरता के साथ आर्थिक विकास को संतुलित करते हुए भारत के अपतटीय और गहरे समुद्र के मत्स्य पालन का विस्तार करने के लिए आधार प्रदान करते हैं।

IAS-PCS I
Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

भारत में गहरे समुद्र में मत्स्य पालन की वर्तमान स्थिति

- **अविकसित क्षेत्र:** भारत में गहरे समुद्र में मत्स्य पालन की बड़ी क्षमता है - इसके समुद्री क्षेत्रों में लगभग **7.16 मिलियन टन** की क्षमता है - लेकिन इसका अधिकांश हिस्सा अभी भी उपयोग नहीं किया जा रहा है।

- **सीमित अंतर्राष्ट्रीय उपस्थिति:** अंतर्राष्ट्रीय जल में भारत के केवल **4 मछली पकड़ने वाले जहाज़** ही संचालित होते हैं, जबकि श्रीलंका के **1,883** और ईरान के **1,216** जहाज़ हैं। यह दर्शाता है कि भारत वैश्विक गहरे समुद्र में मत्स्य पालन में बहुत पीछे है।

- **नियामक अंतराल (Regulatory Gaps):** तट से **12 समुद्री मील** से परे मत्स्य पालन को नियंत्रित करने के लिए कोई विशिष्ट कानून नहीं है। इससे **अवैध, असूचित और अनियमित (IUU) मत्स्य पालन** होता है।

- **राज्यों की सीमाएं:** भारतीय राज्य केवल **12 समुद्री मील** तक ही मत्स्य पालन का प्रबंधन कर सकते हैं। यह समुद्र में दूर गहरे पानी में मछली पकड़ने की निगरानी या नियंत्रण करने की उनकी क्षमता को सीमित करता है।

भारत में गहरे समुद्र में मत्स्य पालन के अवसर और क्षमताएं

- **आर्थिक विकास:** गहरे समुद्र में मत्स्य पालन का विस्तार भारत की अर्थव्यवस्था को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा दे सकता है। **वित्त वर्ष 2023–24** में मत्स्य पालन से निर्यात **Rs. 60,523 करोड़** तक पहुंच गया, और गहरे समुद्र के संसाधनों का दोहन इसे और बढ़ा सकता है।

- **आजीविका सृजन:** आधुनिक गहरे समुद्र के जहाज़ एक वर्ष में लगभग **Rs. 32 लाख** कमा सकते हैं, जो छोटे तटीय नावों से होने वाली कमाई से लगभग **10 गुना** अधिक है। यह मछुआरों और संबंधित उद्योगों के लिए **उच्च आय वाली नौकरियाँ** पैदा कर सकता है।

- **तटीय दबाव से राहत:** मत्स्य पालन गतिविधियों को गहरे पानी में स्थानांतरित करने से तटीय क्षेत्रों में **अति-मत्स्यन** (overfishing) कम करने में मदद मिलती है, जिससे तटीय मछली स्टॉक को ठीक होने और टिकाऊ मत्स्य पालन प्रथाओं को बढ़ावा मिलता है।

- **अप्रयुक्त संसाधन:** भारत की गहरे समुद्र की प्रजातियाँ, जैसे **लैंटर्नफिश, स्क्विड, और झींगा**, में **1.847 मिलियन टन** की क्षमता है, जिनमें से अधिकांश **अप्रयुक्त** हैं। उचित शोषण से भोजन और निर्यात आपूर्ति बढ़ सकती है।

- **रणनीतिक लाभ:** एक मज़बूत अपतटीय मछली पकड़ने का बेड़ा न केवल **खाद्य सुरक्षा** में सुधार करता है, बल्कि हिंद महासागर में भारत की **समुद्री उपस्थिति** को भी मज़बूत करता है, जिससे क्षेत्र में एक **रणनीतिक बढ़त** मिलती है।

भारत में गहरे समुद्र में मत्स्य पालन में प्रमुख चुनौतियाँ

- **नीतिगत अंतराल (Policy Gaps):** भारत के पूरे **विशेष आर्थिक क्षेत्र** (EEZ) में मत्स्य पालन के प्रबंधन के लिए कोई **एकल कानून** नहीं है। समुद्री, पर्यावरण और रक्षा अधिकारियों के बीच समन्वय कमजोर है।

- **बुनियादी ढांचे की कमी:** 90 **मछली पकड़ने वाले बंदरगाहों** में से बहुत कम ही बड़े गहरे समुद्र के जहाज़ों को संभाल सकते हैं। **कोल्ड स्टोरेज** और **प्रसंस्करण इकाइयों** की कमी भी निर्यात क्षमता को सीमित करती है।

- **उच्च लागत:** गहरे समुद्र में मछली पकड़ने के लिए **महंगे ईंधन, उपकरण और रखरखाव** की आवश्यकता होती है, जिससे छोटे पैमाने के मछुआरों के लिए इसमें भाग लेना मुश्किल हो जाता है।

- **डेटा की कमी:** मछली स्टॉक या प्रजातियों के **मानचित्रण** के लिए कोई **केंद्रीय डेटाबेस** नहीं है। इससे खराब योजना बनती है और **अति-मत्स्यन** का जोखिम होता है।

- **पर्यावरण जोखिम:** **बॉटम ट्रॉलिंग, बायकैच** और **समुद्री प्रदूषण** जैसी प्रथाएं नाजुक गहरे समुद्र के पारिस्थितिक तंत्र को नुकसान पहुंचा सकती हैं, जिससे स्थिरता को खतरा होता है।

वैश्विक सर्वोत्तम अभ्यास

- **चीन:** दूर-दराज के पानी में बड़े बेड़े का संचालन करता है जिसमें सहायक **"मदरशिप"** होते हैं, जो तट से दूर मछली पकड़ने की अनुमति देते हैं। यह उच्च उत्पादन और निर्यात क्षमता प्राप्त करने में मदद करता है, लेकिन **अति-मत्स्यन** और **पर्यावरण क्षरण** के जोखिम भी पैदा करता है।

- **स्पेन:** नावों को ट्रैक करने के लिए **वेसल मॉनिटरिंग सिस्टम** (VMS) लागू करता है, **पर्यावरण-अनुकूल गियर** अपनाता है, और पकड़े गए माल की **पता लगाने की क्षमता** सुनिश्चित करता है। स्पेन संरक्षण के साथ आर्थिक लाभ को संतुलित करते हुए टिकाऊ मत्स्य पालन प्रबंधन पर भी ध्यान केंद्रित करता है।

- **न्यूज़ीलैंड:** एक **कोटा प्रबंधन प्रणाली** (QMS) का उपयोग करता है, जहाँ मछुआरों को आवंटित कैच अधिकार प्राप्त होते हैं। यह टिकाऊ फसल सुनिश्चित करता है, अति-शोषण को रोकता है, और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखता है।

- **नॉर्वे:** वैज्ञानिक स्टॉक मूल्यांकन पर ध्यान केंद्रित करता है और सख्त **कैच सीमाएँ** लागू करता है। नॉर्वे **प्रमाणित टिकाऊ समुद्री भोजन** को भी प्रोत्साहित करता है, जिससे विश्व स्तर पर बाजार तक पहुंच में सुधार होता है।

- **आइसलैंड:** स्थानीय समुदायों के साथ **सह-प्रबंधन** को जोड़ता है, जिससे मछुआरों को संसाधन संरक्षण में हिस्सेदारी मिलती है। वे **वास्तविक समय की निगरानी** का उपयोग करते हैं और आर्थिक विकास के साथ समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र संरक्षण को बढ़ावा देते हैं।

IAS-PCS Institute
Result Mitra
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

गहरे समुद्र में मत्स्य पालन पर नीति आयोग की प्रमुख सिफारिशें

नीतिगत सुधार:

- **12 समुद्री मील** से परे मत्स्य पालन को विनियमित करने के लिए UNCLOS के अनुरूप एक राष्ट्रीय EEZ **मत्स्य पालन अधिनियम** का मसौदा तैयार करें।
- केवल ईंधन या उपकरण समर्थन के बजाय **टिकाऊ मत्स्य पालन प्रथाओं** को पुरस्कृत करने के लिए **सब्सिडी** को संशोधित करें।

संस्थागत मज़बूती:

- **नीति, अनुसंधान और निगरानी** के समन्वय के लिए एक **गहरे समुद्र मत्स्य पालन प्राधिकरण** की स्थापना करें।
- अनुसंधान, डेटा संग्रह प्रणालियों में निवेश करें और गहरे समुद्र के संचालन के लिए **कुशल जनशक्ति** विकसित करें।

बेड़े का आधुनिकीकरण:

- कुशल और टिकाऊ मत्स्य पालन के लिए **GPS और कोल्ड-स्टोरेज सुविधाओं** से लैस जहाज़ों को बढ़ावा दें।
- **सहकारी स्वामित्व मॉडल** को प्रोत्साहित करें ताकि छोटे मछुआरे सामूहिक रूप से भाग ले सकें और लाभान्वित हो सकें।

टिकाऊ प्रबंधन:

- **अति-मत्स्यन** को रोकने और समुद्री जीवन के संरक्षण के लिए **पारिस्थितिकी तंत्र-आधारित कैच सीमाएँ** अपनाएँ।
- मत्स्य पालन गतिविधियों की प्रभावी ढंग से निगरानी के लिए **समुद्री स्थानिक योजना** और **वास्तविक समय में जहाज़ ट्रैकिंग** लागू करें।

वित्तपोषण तंत्र:

- **सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP), सॉफ्ट लोन** और मछुआरों के लिए **बीमा समर्थन** के साथ एक **गहरे समुद्र मत्स्य पालन विकास कोष** बनाएँ।

हितधारक समावेशन:

- निर्णय लेने और शासन में **मछुआरा समुदायों** को सशक्त करें।
- **छोटे पैमाने के मछुआरों** को क्षमता-निर्माण कार्यक्रमों में शामिल करें और सुनिश्चित करें कि उन्हें आर्थिक लाभ मिले।

निष्कर्ष

रिपोर्ट **ब्लू रिवोल्यूशन 2.0** की कल्पना करती है, जो **आर्थिक विकास** को **पारिस्थितिक स्थिरता** के साथ जोड़ती है। एक विनियमित और आधुनिक गहरे समुद्र का क्षेत्र निम्नलिखित कर सकता है:

- **निर्यात को बढ़ावा देना**
- **आजीविका सुरक्षित करना**
- **भारत की समुद्री उपस्थिति को मज़बूत करना**

IAS-PCS Institute

यह भारत के **टिकाऊ और समृद्ध ब्लू इकोनॉमी** के लक्ष्य के अनुरूप है, जो यह सुनिश्चित करता है कि महासागर राष्ट्र के विकास, खाद्य सुरक्षा और वैश्विक स्थिति में प्रभावी ढंग से योगदान करें।

यूपीएससी मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न- "दुनिया के सबसे बड़े अनन्य आर्थिक क्षेत्रों (ईईजेड) में से एक होने के बावजूद, भारत का गहरे समुद्र में मछली पकड़ने का क्षेत्र अभी भी काफी हद तक अविकसित है। इसके मद्देनजर, भारत में सतत गहरे समुद्र में मछली पकड़ने को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक अवसरों, चुनौतियों और नीतिगत उपायों पर चर्चा कीजिए। अपने उत्तर को वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं के साथ स्पष्ट कीजिए।" (150 शब्द)

Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806